

श्री सीय रघुवर की प्यारी लीला भा रही ।

गौर श्याम की झांकी नैन समा रही ॥

दामिनि जलधर समय सीय रघुवर रूप है जिन ने निहारा

कोई मोर समान है नाच रहा कोई चात्रक इंव मतिवारा

किसकी रसना मेंढक ज्यों है जै हो जै हो गा रही ॥१॥

मृग नैना और नाच मोर का देखो मराल गति प्यारी

कोकिल कलरव सुनाए स्वामी बोली बोल जनक दुलारी

पिय प्रीतम दृष्टि प्रिया रूप में सभी स्वाद हैं पा रही ॥२॥

मृग छाला पै राजत रघुवर रसाल वलकल सूख रहा

कदम्ब पै तरकश धनुष लटकते मोर मृग है कूद रहा

प्रीतम करे सन्मान प्रिया जब फूल कुश समधा ला रही ॥३॥

मलका पुष्प गिरे वेणी ते केश संवारत महाराणी

सादर कर कमलों में लेकर बोतल श्री रघुवर बाणी

वृह विकल नहि कीजे इनको सुनत प्रिया शरमा रही ॥४॥

मृगया से लौटे रघुनन्दन सादर पांव परवारत प्यारी

निज अंचल सो पोंछन लागे इस मिस रोके अवध विहारी

देखो प्रिया इस मुद्रिका नग पै लालिमा कितनी छ रही ॥५॥

मुख में शबरी फलनि लालसा रसना को सत्य वाणी भाई

प्रिया बिना और न देखन को नैननि सौंगधि खाई

चरण अभय दाता जिनके मेरी धारणा इनको ध्याइ रही ॥६॥

देव मण्डल के मंगल कारी कोदण्ड धारी श्री रामा

सूर्यवंश सौभाग्य प्रघट हुवे मधूकर जिव अंग श्यामा

मैगसि मन मानस वह मूरति आनंद से उमगा रही ॥७॥